अध्याय–दृतीय

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

दृतीय अध्याय

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0.0 प्रस्तावनाः—

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन शोध का महत्वपुर्ण भाग हैं। प्रथम अध्याय में इस अध्याय के उद्देश्य एवं परिकल्पनाएं आवश्यकताऐं एवं महत्वों की चर्चा की गई। प्रस्तुत अध्याय मे सम्बन्धित साहित्य का पुनरालोकन के बारे मे चर्चा की गई हैं।

सतत् मानव प्रयासो से भुतकाल मे एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान मे मिलता हैं। अनुसंधायक द्धारा प्रस्तावित अध्याय या परोक्ष रूप मे सम्बंधित समस्याओं पर किए गए कार्य के बिना जो कि स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की प्रकिया मे एक महत्वपुर्ण कदम हैं। किसी भी क्षेत्र मे वैज्ञानिक अनुसंधान करना हैं तो उससे सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम होता हैं।

प्रस्तुत शोध मे सम्बन्धित साहित्य एक जरूरी ही नही महत्वपुर्ण हैं। मनुष्य रचनात्मक कार्यो को करता हैं। यह प्रतिदिन के आवश्यक कार्य होते हैं जो कि उसके द्धारा किए गए कार्य कि विवेचना करते हैं इसके कार्यानुभव की पुष्टि होती हैं। और स्वयं ही करता हैं। बालक कि प्रवृति भी कुछ नया करने कि होती हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पूर्वआलोकन करने से सम्बन्धित क्षेत्र के बारे मे ज्ञात हो जाता हैं कि शोध जो लिया हैं उस पर कहा तक शोधकार्य किया जा चुका हैं । एवं उसके क्षेत्र का विकास नही हो पाया हैं तथा भविष्य मे इस पर ओर कौनसा शोध किया जाए। साहित्य को समद्ध शोध कार्य हि करता हैं । यह अध्ययन शोधकर्ता द्धारा रचनावाद उपागम का गणित उपलब्द्धि एवं तार्किक योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन कक्षा सातवी के सन्दर्भ मे हैं ।

कुछ प्रमुख अध्ययन इस प्रकार हैं—

2.1.0 रचनावाद उपागम से सम्बन्धित अध्ययन

Tarannum(2009),conducted a study to comoarison of Constructivist Approch With Traditional Approch for Teaching Urdu to Class 9 standerd in Term of Achivement in Urdu.

Objectives of the study

1. To study the effectiveness of the Constructivist Approch in term of: Achivement in Urdu and Reactionof the Student toword the Constructivist Approch.
2. To study the effect of Ttreatment and Gender and their interaction on Achivement in Urdu by taking the student previous year Urdu score as covariate.

Following are the finding of the study

1. Constructivist Approach was effective in terms of student Achivement inUrdu.
2. Constructivist Approach was effective in terms of student Reaction toward the Approach.
3. Treatment produced a significant differential effect on the student Achivement in Urdu.

मखवाना (2007) द्वारा रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5 वी के विद्याार्थियों की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया,

इसके निम्नलिखित उद्वेश्य थे–

1. रचनावाद उपागम द्वारा हुआ 5वी के विद्याथियो की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के छात्र एवं छात्राओं की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं होगा। इसमें पुर्व परिक्षण तथा पश्च परीक्षण का प्रयोग किया गया।जिसमें निष्कर्ष थे–

1. रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के विद्याथियो की गणित उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

2. रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के छात्र एवं छात्राओं की गणित उपलब्धि पर प्रभाव पाया गया।

यह अध्ययन रचनावाद उपागम पर हुआ हैं जिसमें इस उपागम से बालको के अधिगम में बहुत अधिक सहायता करता हैं। उनके ज्ञान में वृद्वि होती हैं तथा वे ज्ञान की रचना करना सीखते हैं ।

ठाकर,आर,मनसुख(2008) में कक्षा आठवी के विद्याथियों का पाठयपुस्तकीय तथा सन्दर्भिति ज्ञान–एक अध्ययन पाठयपुस्तकीय तथा सन्दभित ज्ञान की प्रकृति क्या है? सन्दभित ज्ञान को पाठयपुस्तकीय ज्ञान से विद्यालयों में जोडा जाता हैं ।

शोध प्रश्न –

1. क्या स्थानांतरित एवं अन्य विद्याथियों में पाठयपुस्तकीय ज्ञान में कोई अन्तर हैं ?

2. क्या स्थानांतरित एवं अन्य विद्याथियों के सन्दर्भित ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर हैं?

3. क्या स्थानातरित विद्याथियों के पाठयपुस्तकीय तथा सन्दर्भित ज्ञान में क्या अन्तर हैं ?

4. क्या अन्य विद्याथियों के पाठयपुस्तकीय तथा सन्दर्भित ज्ञान में क्या अन्तर हैं ?

इस अध्ययन में आठवी कक्षा के 20 विद्याथियों को लिया। जिसमें 10 स्थानांतरित विद्यार्थी तथा 10 विद्यार्थी अन्य विद्यार्थी थे।

शोध–उपकरण 1 FGD तथा सहभागी अवलोकन :–

परिणाम – इस अध्ययन में यह निष्कर्ष आया कि स्थानांतरित विद्यार्थियों का सन्दर्भित ज्ञान के रुप में समुद्र के बारे में अधिक हैं किन्तु अन्य विद्यार्थियों का नहीं । इस अध्ययन में यह पाया कि दोनो प्रकार के विद्यार्थियों के सन्दर्भित ज्ञान में क्षेत्र के आधार पर अन्तर हैं ।

2.2.0 गणित उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन या गतिविधि / आधारित शिक्षण सम्बन्धित अध्ययन

Shah(1981), conducted a study to develop and try out programmed material in mathematics for student of class 5.

उद्देश्य–

1. कक्षा 5वी गणित के विद्यार्थी का पाठ्यक्रम के विभिन्न ईकाइयों मे प्रोग्राम मटेरियल का विकास करना ।

2. चयनित स्कुलो से कक्षा 5वी के कुछ बच्चों का परीक्षण कराया इसके निम्न निष्कर्ष निकाले गए –

1 प्रोग्राम मटेरियल से चयनित ईकाइयों का शिक्षण प्रभावी रहा ।

2 विद्यार्थियो एवं शिक्षको द्वारा प्रोग्राम मटेरियल कि प्रतिक्रिया सराहनीय रही।

व्यास **(1983)** द्वारा SPLP (Symbol picture logic programmed) या तार्किक सांकेतिक चित्र कार्यक्रम ,पद्वति उपागम द्वारा गणित की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन–

इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

SPLP द्वारा मुलभूत तार्किक सांकेतिक का विकास करना ।

SPLP द्वारा गणित उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना ।

SPLP द्वारा तार्किक सांकेतिक योग्यता के प्रभाव का अध्ययन करना ।

निष्कर्ष:–

SPLP द्वारा नियमित समूह कि अपेक्षा प्रयोगात्मक समुह कि गणित उपलब्धि बहुत अच्छी रही ।

उच्च बुद्धिलब्धि वाले विधार्थियों कि SPLP द्वारा अधिक फायदा हुआ तथा निम्न बुद्धिलब्धि विद्यार्थियों के उपलब्धि में भी विकास हुआ।

जिन विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता कम थी। SPLP द्वारा गणित की सांकेतिक तार्किक योग्यता मे वृद्धि हुई।

रामन जे, (1989) के द्वारा विद्याथियों में गणित केल्कुलस में आने वाली सामान्य त्रुटियों की पहचान करना एवं उसका उपचार करना।

इसमें निम्नलिखित निष्कर्ष हैं–

1. प्रायोगिक समूह के विद्याथियो के पोस्ट टेस्ट अन्तर पाया गया हैं ।

2. केल्कुलस में विद्याथियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को कम करने में उपचारात्मक शिक्षण प्रभावी होता हैं। इस अध्ययन में केल्कुलस की त्रुटियों की पहचान कर प्रयोगत्मक समूह को उपचारात्मक शिक्षण दिया। जिसमें उनका एचिवमेंट बढ़ा।

Datta,(1990) , Has discussed diagnosis and prevention of learning disabilities in the reasoning power of the student in Geometry.

Datta(1990) find that the disabilities are there becouce the teaching of Geometry is geared to the needs of the most able

student.and use of audio-visual materials leads to greater intrest (learner understanding) and longer relationship of Geometrical concept.

भाटिया –कुसुम **(1992)** , अभिकमित अनुदेशन सामाग्री द्वारा भिन्न सीखने मे कठिनाई की पहचान करना तथा उसका उपचार करना –

उपरोक्त अध्ययन यह यह परीक्षण करता हैं कि निर्देशनात्मक सामाग्री उपचारात्मक शिक्षण उपकरण के रूप मे प्रभावशाली होती हैं । इस अध्ययन का उद्वेश्य कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भिन्न उपविषय हेतू निर्देशनात्मक सामग्री उपचारात्मक शिक्षण उपकरण में प्रयुक्त करना तथा परम्परागत शिक्षण विधि एवं उपचारात्मक शिक्षण विधि के द्वारा शिक्षण विद्यार्थियो की उपलब्धि में होने वाले अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करना था ।

इस अध्ययन हेतु कक्षा 5वी के 50 विद्यार्थियो का चयन किया गया प्रदत्तों के संकलन हेतु एक मानकिकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों विश्लेषण हेतु सांख्यिकी मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी टेस्ट का प्रयोग किया।

Ussima (1993). Conducted a study to examine the effect of simulation technique in the teaching of mathematics with referency to one subject area "matrices". This study was conducted on 30 student aged between 12 and 13 year, who were divided into experimental and control groups. An objective type test was administered in order to collect the relevant data .the data were analyzed using mean, SD,and t test. In study the simulation technique was found better in learning mathematical topics that the traditional method.

जैन **(1994)** OB साइन्स किट से गतिविधि आधरित शिक्षण कौशल के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन

इसके मुख्य उद्वेश्य निम्नलिखित हैं–

1. OB साइन्स किट द्वारा गतिविधि आधारित कौशल की रुपरेखा का प्रयोग

गतिविधि आधारित शिक्षण कक्ष कौशल का OB साइन्स किट के प्रभावशीलता का अध्ययन किया। जिसमे कक्षा चौथी के 46 लडके एवं 42 लडकियों को चयन किया। जिसमें प्रयोगकर्ता ने पाया कि OB साइन्स किट से बच्चों में पयावरणीय ज्ञान में निर्मित हुआ, जिसकी उपलब्धि में वद्वि हुई।

2. गतिविधि आधारित शिक्षण कौशल, परम्परागत विधि से ज्यादा प्रभावी हैं।

3. प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियो में लिखित कि अपेक्षा मौखिक परीक्षण में अच्छा परिणाम आया ।

Reddy and Ramer(1995) ,conducted a study to find the effectiveness of multimedia based modular approach in teaching mathematics to low achievers.

The present study is an attempt to develop multimedia modules for mathematics for the use of low achievers studying in standard 8 and to measure their effectiveness and also asses their advantage over the traditional lecturer method. Findings revealed that the that the experiment group performed significantly better than the control group on the post test.

Deshmukh (1997) , Disigned a study to develop alternative strategies and support activities as well as instructional material to facilitate learning of the unit: vulgar fraction" in mathematics syllabus of standard 5^{th}. It was found that if the child learn through games, he does not fell the stress of leaning ,and learning becomes easier and enjoyable.

Varma(1998) studied the school mathematics project : toword freedom from fear,

उद्देश्य–

1 वर्तमान समय में बच्चे गणित शिक्षण से दुर जाना चाहते हैं।

2 बच्चों मे गणित के प्रति डर को जानना ।

3 गणित अधिगम मे कठिनाइयों को दुर करने के लिए पाठ्यक्रम को सुधारना।

निष्कर्ष:–

प्राथमिक कक्षाओं मे गणितीय अधिगम में बच्चे के डर गणितीय अधिगम में आने वाली समस्या को दुर करने के लिए गतिविधियों पर आधारित शिक्षण अधिगम कौशल से उपलब्धि एवं डर को कम किया गया ।

राखे (2004) द्वारा कक्षा 5 वी के विद्याथियो की गणित विषय के लिए निर्धारित दकता में उपलब्धि पर उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया गया। जिससे यह निषकर्ष निकाला गया कि प्रयोगात्मक समूह को उपचारात्मक शिक्षण दिया जाय तो उसका प्रभाव एचिवमेंट पर पड़ता हैं ।

D–367